शोपाल गैस कांड
संदर्भ और सवाल

ESL'4
PRI 31
भूमिका

भोपाल की गैस दुर्घटना हम सबके लिए चेतावनी है। श्रद्धालु अनुभविकों और वित्तवशिक्षित युवाओं के लिए आगे के समय में इस मुद्दे को लेकर आचरण उठाना जरूरी है। यह पूर्वांग उल्लेखित दिशा में एक छोटा सा प्रयास है। इसके पहले भाग में भोपाल में क्या हुआ यह बताया गया है; दूसरे भाग में इस दुर्घटना के कारणों पर चर्चा है - ऐसा क्यों हुआ और आगे भी ऐसा क्यों हो सकता है? और अंत में - हम क्या कर सकते हैं?

आम मजबूरी और लोगों के बीच सरल भाषा में प्रस्तुत यह संशोधण पूर्वकाल चर्चा एवं आगमन का एक छोटा सा माध्यम व्यक्ति सक्षम, यही हमारी उम्मीद है।
कया हुआ

कयामत की रात

कला और संवृद्धि के प्रमुख केंद्र के रूप में विकसित हो रही मध्य प्रदेश की राजधानी भोपाल की आवास में निवास की भीषणतम आत्महत्या दुर्घटना के संदर्भ में ही जाना जाता है।

2/3 दिसंबर 1984 की सधी गर्मी में, अभी गूढ़ शहर टीका में सों भी न पाए थे कि पूरे भोपाल पर दहशत का कोहारा छा गया। गूढ़कि कमांड के कॉर्पोरेट बोर्ड के उन्मूलन के लिए शावक में विकसित हुए तंत्र ने शहर के कई बड़े हिस्से पर मौत की विकाश का जोखिम कर दिया। घरों, गांव, ट्रैक, रोडों, लाइन के भरपाई से सभी जीविकार्यों के लिए दीवानी अतर ने रंग दिखाया शुद्ध कर दिया। सभी को आँखों में अच्छी जानकारी की दीवानी होने लगी, और सभी का दम पूर्ण होना लगा। गूढ़ के साथ समय में आये लोगों के लिए पुराना दम मोड़ दिया। सभी की आँखों को शीशी गगन होने लगी तो किसी को उससे व दर्द का न रखने वाला सीरोलिस्ट शुद्ध हो गया। दम पूर्ण होने के साथ-साथ किसी के भंडार से धारा निकलने लगा तो किसी को लचीला लगने लगा। किसी उपयुक्त चेतावनी के परिवर्तन के आधार ने इससे परिवर्तन जानी के निकाय का चिह्न जाने में बढ़ता ही दिखा। दिशा जनसंख्या ने इसके उत्तर भाग में शुद्ध कर दिया। मृत्यु व मृत्यु से जुड़े सामाजिक-विदेशी और पहले से देखा बेड़ों के लिए रखने का न किसी को होश था और न साहस।

सुख की पहली दक्षिण होने से पहले-पहले दसवीं तक हजार लोग भाग का भोपाल के आस-पास रहेंगे, इतारसे, सोरसंगनाध, अयुकुलागंड, विद्यात आदि स्थानों पर पहुँच गए थे और पूरे भोपाल सिर्फ, और मिट्टी, लाइसों का शहर बना था। फिल्मों व व्यवस्था, लोक प्रदर्शन और कार्यक्रम व्यवस्था में बदलाव लगे। सार्वजनिक, छावनां, शोभन पार्क, भेंटसारी, धी. एडवर्ड टी. कांग, सिंह बॉल, सामाजिक, राजस्थान, जलालपुर, जापान कांग, जापान नगर, चीन, जापान, बंगाल, काशी कॉन्सर्ट, शोभन नगर, भवन और राजस्थान में लाइसों होने का जान मूल स्तर पर रहे। सार्वजनिक, छावनां व व्यवस्था के लिए रखने का न किसी को होश था और न साहस।

भोपाल का पता था इस तरह 'कयामत के दिन' या 'प्रलय' की घटना की चर्चा से भी अधिक मग्नता लगा। वनषु: यह विकाश को केंद्रों में छोड़े प्रज्ञानक गोद का एक छोटा पूर्व प्रभाव मात्र प्रतीत होता है जिसके सम्बन्धित परिस्थिति आज भी कल्पनात्मक ही है। सभी वेबड़ों चोटी व्यवस्था व जीवन पर पूर्ण विश्वास लगा गया था।

भीषण प्रभाव

सुख हो तुम्हारे के इस समस्त बड़े आत्महत्या दुर्घटना में हुई शर्त का अनुमान लगा रहना प्रभाव असमान है क्योंकि इसमें प्रभाव बहुत दुर्घटना है और उससे जान अस्तित्व चोंडी ले-जाए तो नहीं रहता है। 2500 मृत्यु तो सस्ती हायटिक हायटिक होंगे इतने की व्यवस्था लोगों के अनुमान से दम हजार से उग्र
क्या हुआ?

मुनिन कमांड का कॉटिनशन कारखाना भोपाल शहर की उत्तर-पूर्वी सीमा पर स्थित है। यह कारखाना भोपाल-इट्टारे रेलवे लाइन से एक दम सटा हुआ और भोपाल रेलवे स्टेशन से मात्र दो कि. मी. की दूरी पर स्थित है। वै. पी. नगर की वृंदावन-धोपाड़ राष्ट्रीय मार्ग कारखाने के साथ ही लगी हुई है और बिलासपुर नगर, शाहजहांपुर, सिंधी नगर, बसार नगर, निशानपुर तथा अन्य जगहों के साथ ही भी यह कारखाने के तीन ओर देंड्र कि. मी. के गांव में बसी हुई है।

2 दिसम्बर, 1984 को इस दुर्भाग्यपूर्ण घटना के भोपाल का तारीख 12-14 दे. प. वार और 12 कि. मी. प्रति सेकंड की गति से मन्द हवा दक्षिण व दक्षिण पूर्व दिशा की ओर वह रही थी। इस वित्तलय
भारत में यूनिवन कार्बाइड

पात्र से यूनिवन कार्बाइड का रिष्ता बड़ा पुराना है। सन 1905 में नेपल कार्बन कंपनी (ई.) लि. ने वैडी के केंद्र में कारोबार आरम्भ किया और अगला बार 1918 में कंपनी कार्बाइड बन गयी।

* सन 1940 में कालक्ति में ही इस्कार नाम भी आया।

* सन 1952 में मुद्रण में एक और संशरीण कंपनियों गयी।

* सन 1958 में फ्रीशालाइट प्लाट बनाने में लगाया गया।

* सन 1965 में एक आर्क यूनिवन प्लाट कल्पना में स्थापित किया गया।

* सन 1969 में बड़ी खेती का ही एक और प्लाट हैदराबाद में स्थापित किया गया।

* सन 1969 में भौगोलिक कृषि कश्मीरी फूटें को स्थापित किया गया।

* सन 1971 में एक इलेक्ट्रोमेक्स ने टांड के सूचना प्लाट में लगाया गया।

भारत में यूनिवन कार्बाइड कंपनी को सन 1983 में पुनःप्रतिष्ठा की गई। इसका आधार हिंदोस्तान बंदरों का निर्माण था। साझा लेने के साथ कंपनी का सन 1983 में वित्तपत्र लगभग 15 करोड़।
कारणों पर ध्यान

इस दुर्दर्द से दुख का महत्वपूर्ण आयाम है कि इसके लिए सिवाइंद्र परिस्थितियों पर लगता अभी न हो जाती जा रही है, जैसे डिवी से प्रतिच्छिपत पराबालि िसारीय की जिक्रहत गैस के व्यवहार अझो साइनेट वा कार्नाय या दोनों के मिश्रण होने के विचार में उभारा दिया। अगर धरा कर प्रभावित जन संरचना के परिस्थितियों ने योगदान ही निर्देश दिए तो विशेष जैसे की मौजूदा की पृथक को। किसी उपलब्ध प्रमाणों के आधार पर वैज्ञानिकों की ऐसी सम्योजन है कि विशाल अझो साइनेट में 0.02 – 0.05 निरुत्त वायुसमान को स्थान उठाया गैस वितरण में साइनेट की श्री मुख्य अधिक थी। गैस के पहले मूल जनसंख्या के राज विभागों में आना साइनेट तत्त्व की मौजूदा ने वैज्ञानिकों को नियंत्रण में खाल दिया है। क्योंकि साइनेट के तरह उठा दोनों गैसों के लघु के साइनेट में प्रवेश की व्याख्या में असाध्य हैं। मौजूदा लोगों-पीठों को प्रभावित देखने हुए, नीचे पताका, कि सरकार गृह वर्तन निकट भाषण में जनता के समुच्छ प्रकट हो सकता।

तीन इसी प्रकार यह आकर भी लगाई जा रही है कि विशाल अझो साइनेट के भण्डारण डेकों में पानी, रस्सारों के कारण ऐसी रासायनिक प्रक्रिया की शुरुआत हुई, जिसमें भण्डारण डेक का तात्पर्य व नाय असाध्य रूप से बढ़ गया। किसी पानी रस्सारों के कारण तथा उसकी मजबूती के निर्माण में कोई ज्ञानकारी पहेलीय की मौजूदा या प्रक्रिया के पास नहीं है। यहाँ तक कि डेकों में पानी युक्त जाने की पृथक करने वाले रोश प्रभाव भी अब तक उपयोग के सारन सहा आये हैं और न ही भाषण में उनके प्रकट होने को कोई समाधान नहीं आया है।

भण्डारण डेक में तात्पर्य व नाय अनुभव की दृष्टि को जन्म देने वाली रासायनिक प्रक्रिया चाहे जो भी रही हो, दो बार से इसके नहीं होगा जो सबकी कि सरकार डेक स्वच्छ को असाध्य गृहवृत्ता कह दिया। सांस्कृत के मूल डेक ने संरचनाओं, गृहवृत्ता व नाय-संरचना के दोनों के साथ-साथ यह दुर्दर्द विशाल अझो साइनेट की सामाजिक ज्ञानकारी के अवधार तथा अवधारणा सुरक्षा प्रभावों के अवधार के दोष की भी उथाना लगाता है।

माने और लूटी तरह प्रभावित होने वालों को यह संदेह अभी तक तय नहीं हो रहा है। करारामों को लगाने और उनके बाद को जन-रिपोर्ट पर तलाश लगे हैं। व्यावहारिक स्थिति अभी तक सामने नहीं आई है।
प्रश्नों के अनुसार, कई बार कहा जाता है, जिसमें नीतियों, शास्त्रों, दर्शनों, धर्मों आदि के बारे में होता है। इसका प्रयोग, कार्यान्वयन, संप्रदाय, धार्मिक, शास्त्रीय एवं शासनीय कल्पना, दर्शनीय और साहित्यिक ठाप में होता है।

प्रथम महायुद्ध में, इसके इतिहासी में हजारों हजारों भाषाओं में प्रयुक्त गया था, और फिर दूसरे महायुद्ध में हिटलर ने इसका इतिहास में हजारों का मार्ग दिखाया।

यह जीवनी यह समस्या के द्वारा समझी गई है, आखिर, गले और फक्तों को प्रभावित करती है और इसलिए हंस्युद्ध में उन्हें बड़ा हानि रहा है।

इसकी सुरूचिक शैली 1 क्रम प्रश्न कोई उत्तर नहीं दिया गया है।

आज आज के प्रभावों का कोई सही उत्तर नहीं दिया गया है।

पहले भी दुर्घटनाएँ हुई हैं

पीड़ा के इस कारखाने के पहले भी अनेक दुर्घटनाएँ हो चुकी हैं:

* 24 नवंबर, 1978 को कारखाने के निर्माण के नेतृत्व में भयानक आग लगी जिसे दस मंडे तक काबू नहीं किया जा सका था। इसमें करीब 4, करोड़ लोगों की शरी कहीं हुई।

* 25 दिसंबर, 1981 को प्लांट पर क्रांति करते समय पार्सीजी गैस के रिसर्ट से प्लांट अपेक्षा गोहराम अधिक मात्रा मिली।

* जनवरी, 1982 में एक बार पुनः पार्सीजी रिसर्ट से 28 लोग इस शिकार की शिकार हो कर कई मात्र किन्तु और निम्न के चेहरे जुड़ते रहे।

* 22 अप्रैल, 1982 को कंट्रोल सिस्टम के निजी नधर पर क्रांति करते समय तीन बिजली कर्मचारी जल कर बुरी तरह पान कर हो गये।
यूनियन कार्बाइड पोपाल की मजदूर यूनियन
ध्यान सरकार को दी गई चेतावनियाँ

1. भारत सरकार के गुहमंत्री को यूनियन के अध्यक्ष द्वारा 17
अक्टूबर 1982 को दिए गए जापान में श्रमिकों की कुछ मार्ग यह थीं:

1/ उद्योग की उपयोगीता की उच्च स्तरीय जाँच निष्कर्ष विवरणों से संपादन का हमसे
श्रमिकों एवं उद्योग के आर-प्रस्ताव के जन जीवन पर पड़ने वाले प्रभाव का अध्ययन कराया
जायें।

2/ उद्योग में असमर्थ होने वाली भी भीम दुर्घटनाओं की निष्कर्ष जाँच कराये।

3/ उद्योग प्रबंधकों द्वारा लिखे जाने वाले श्रम अभिलेखों के ज्ञापन एवं श्रम संसाधन के
कार्यक्रमों तथा श्रमिकों के उच्च आवलमन समारोहों जरूरी।

2. मध्यप्रदेश के मुख्यमंत्री को यूनियन के अध्यक्ष द्वारा
18 नवंबर 1982 को दिए गए जापान के कुछ अंश:

“कृपया दिन पूर्व उद्योग में सुरक्षा सवा या अगदी गठन, इसके दीप के उद्योग में दस दुर्घटनाओं
हुई। इन घटनों के ज्ञापनों की तरफ से कई यूनियन नामांकन कराये।
वार्षिक अनुमानों में
प्रणाली संकेत रहे अनुमानों का प्रणाली संकेत रहे अनुमानों का प्रणाली संकेत रहे
हुआ है। हाल ही में अन्य एक अधिक लोगों का साधन पत्राधिकारी
परिसंचरण से दुर्घटना जाना हुआ, जिसमें उसका खेला निकट हो गया।

दिनांक
26 दिसम्बर को फास्टमैन गैस के निकायों से अदालत की मूलधर्म होते है। 

उनके कुछ दिन उपरण 9 जनवरी 82 को लागू 24 व्यक्ति फास्टमैन गैस द्वारा भीत के मृत्त से रहे।

करण महाराष्ट्र के हेरेम बने 5 अक्टूबर 82 को एंटआई भर. पाइयां लाइफ फॉट जाने से 3
व्यक्ति दुर्घटना प्रति हुई, जिससे शी वी एन. आचार्य पाइयां कारण एक मृत्त लग नहीं।
मुख्यमंत्री ने उद्योग के कारण अवचारण फास्टमाइन, श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री श्री
संस्थान संस्थान दुर्घटनाओं के निर्माणी
पूरी तरह पूरी तरह पूरी तरह पूरी तरह पूरी तरह पूरी
प्रणाली संकेत रहे अनुमान संकेत रहे अनुमान संकेत रहे अनुमान संकेत रहे अनुमान
अनुमान
। कार्यक्रमों के समीप दीवार दीवार दीवार दीवार दीवार दीवार
व्यक्ति के समीप दीवार दीवार दीवार दीवार दीवार
| कार्यक्रमों के समीप दीवार दीवार दीवार दीवार दीवार

14 अक्टूबर को शुरू करने भेंट में हाथ आ जाने के कारण एक कार्यक्रम की जापान नहीं होगी,
जो आज दिनांक के है।
भोपाल की इस पैटर्न की इतिहास

भोपाल की कीटनाशक पैटर्न का इतिहास सन 1966-67 में यूनियन कार्ब़न्ट (ईड्रा) लि. के अधीन संचालित विभाग की स्थापना के साथ जुड़ा हुआ है। इस विभाग का कार्यकाल सन 1968 में ही गोल्डेल से हटा कर भोपाल ले आया गया। यह इस यूनियन कार्बनट द्वारा साइटेड ले आया गया था।

* सन 1969 में भोपाल के केबिनेट रेड, कर्मी पंडेत यूनियन कार्बनट ने आयात की गई मिथाई आइसो साइटेड पर आधारित कीटनाशक 'सीमिन' (कार्बोहैल) के निर्माण के लिए संचालित किया।

* सन 1970 में यूनियन कार्बनट (ई.) लि. ने विदेशी मूद्रा की बकरी का वातावरण देने हेतु उपयोग किया जा सकता।

* नवम्बर 13, सन 1973 को यूनियन कार्बनट (ई.) लि. और यूनियन कार्बनट कारोबारी, अमेरिका के एक एक संयुक्त संगठन के साथ समझौता हुआ। समझौते के तहत कंपनी के अमेरिकी मूल्यांकन पर भारतीय शाखा को लगभग 20 हज़ार 5. लेकर उपयोग हेतु आवश्यक मूल्यों व तकनीकी जानकारी दिया गया।

* सन 1973 में मिथाई आइसो साइटेड की पहली क्रिस्टल अपनिया थी कार्बोहैल के लिए अमेरिका से लाने गई।

* अगस्त 31, 1975 यूनियन कार्बनट (ई.) लि. के भारत सरकार के सार्वजनिक आयुक्त के उद्धार में अधियोग (राजनीतिक) के उपयोग के लिए लाइसेन्स प्राप्त हुआ था। (लाइसेन्स नं. दी/1/409/73)। रिपोर्ट बैंक एफ इंडिया ने भी विदेशी मूद्रा निर्मित अभिनविम, 1973 को थक 29(2)ए के अंतर्गत यूनियन कार्बनट (ई.) लि. को कार्य आरम्भ करने की अनुमति दान कर दी।
सन् 1976 में 20 जनवरी की लागत से भोपाल में छोटे प्रूनिंग कामों के लिए आयोजित किया गया था। उस दिन, जो सरकार ने आग्रह कर भी कहा था। उस दिन में होने वाली गाढ़ी को अपने पुत्र रखा जाता है। हाल ही में विकल्प एक प्रिटिंग के आयोजन इस रूप से किया गया था कि कोटा ने से बाहर होने का दृष्टिकोण उठा है।

- सन् 1977 में कोटा फैक्टरी को स्थापना हुई तथा अमेरिका से लायी गई मिडशाइल आइसो साइकेट के जरिये 321 टन कोटा का उत्पादन किया गया।

- सन् 1978 में अल्प नेपाल प्लांट की स्थापना हुई। लागत का करोड़ की विदेशी मुद्रा के खर्च से लागत यह प्लांट महंगा एक था। 1978 से 1984 तक इस प्लांट में अल्प नेपाल का नियोजन नहीं हुआ और भूल तक विदेशी मुद्रा खर्च का कमान द्राप अपने अमेरिकी मुख्यालय से अल्प नेपाल आयात किया जाता है।

- दिसंबर 1979/80 में मिडशाइल आइसो साइकेट बनाने के प्लांट की स्थापना हुई।

- सन् 1981 में मिडशाइल आइसो साइकेट पर आधारित कोटास्क्रिया का 2704 टन किराई उत्पादन हुआ जो फिर कर सन् 1982 में 2308 टन तथा 1983 में 1657 टन रहा गया।

- मई 18, 1982 को मुख्य मंत्री की स्थानीय पुलिस द्वारा किया गया जानकारी में अपने आपों के साथ उपवास दौं जाने लगे घड़ी के 6 मास से फैक्टरी में तैयार 600-700 टन कच्चा माल (मिडशाइल आइसो साइकेट) आंध्रप्रदेश, राजस्थान, गुजरात, महाराष्ट्र आदि पेश रखने का भी आयोजन लागू किया गया। इस जानकारी में यह आयोजन का लाभ नहीं किया था कि उन स्थानों पर उद्योगों के लागत से तैयार माल का उत्पादन किया जा रहा है और मिडशाइल फैक्टरी में आंध्र प्रदेश के आदिवासी को नियुक्ति देने वाले कार्यक्रम बदन करने की धमकी दी जा रही है।

अभी पोशाक की इस फैक्टरी में लागत कहीं नहीं नियंत्रित और दो-दोन दी उड़े दी के मजबूर हैं।
ऐसा क्यों हुआ?

भीमाल की यह दुर्गनाट्य अपने में अकेली नहीं है। देश में काफी प्रकार से चुटकूल दुर्गनाट्य हो रही है जिन पर कोई ध्यान नहीं दिया जाता रहा है। अकेले उठे ऐसे हैं जहां इस से तार का अर्थ आज भी मौजूद है। ऐसी दुर्गनाट्य कई जगह हो सकती हैं। इस दुर्गनाट्य के अलावा कई बातों को समझाने के लिए हमें बहुत अधिक जानकारी और तिथि-तारीख के सहारे हमें इसका समलया होना चाहिए। साथ ही साथ देश में चल रही कृषि विकास नीति और कोष-किसानों के समक्ष में व्यापार संदर्भ को भी महत्वपूर्ण है।

देश में ऐसी घटनाओं की अन्य मिलाएँ

भीमाल में होने वाली यह दुर्गनाट्य अपने में अकेली नहीं है। इससे पहले भी देश में औद्योगिक गतिविधियों के फलस्वरूप मर गया है और आज भी मर रहे हैं। उनमें ये कुछ मिलाएँ:

* मंदिरों (मंदिरों के) में स्लैट की उड़ान में हर महीने 13 अभिमानी विश्राम की घड़ी चुल के शिकार होते हैं और सैकड़ों मृत्यु से दर्द बीमार है।

* आकाशमणि (आकाशमणि) में मानव बनाने वाले फरारों में हर वर्ष सैकड़ों मजबूर (दिनमें बच्चे भी शामिल हैं) दिनदहाड़े मर के लिए अपने के लिए अपने बचत होते हैं और अनेकों मरते हैं।

* निदान - निराशा, दुखों के भंगरों और पर्यावरण आदि की खातिर में काम करने वाले मजदूरों की अंदर दिन मृत्यु होती है।

* 1977 में उपग्रह प्रयोग और लालपुरी खेतों में मांगकरे मानव कामकाज के अनुरुप में 58 लोग मर गए और दूसरे सी बीमार हो गए।

* बाबाई शिक्षा सरकार के द्वारा में उदय प्रकाश को विश्वविद्यालय और फर्निचर दिल्ली 22 जुलाई 1982 को एक मजबूत बांधकाम परियोजना के मुद्दे से तार रखा।

* नगराधिकार (नगराधिकार) निखत ग्लासायर रेडा के कारणों में सिर्फ 1982 में ही 23 भ्रष्टाचार की मृत्यु हुई।

* चीनी रेडियो, अबलानामुख और 8 मार्च 1984 को खानिहाट तेल के प्रदर्शन में जबरदस्त आग लगाने से दो मर और अनेकों घायल हुए।

* दिल्ली के दिल्ली क्लासिकल फाइल का में 10 अप्रैल 1984 को क्लोजिंग गैस के रिसन से तेंदुल शो मजदूर प्रभावित हुए।

* 13 दिसंबर 1984 को जबलपुर जिले में खानिहाट तेल के अभियान गैस के रिसन से एक बच्चे की मृत्यु हुई और अनेकों लोग युगल तार प्रभावित हुए।
बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का मकड़जाल

अंतरराष्ट्रीय विकास के प्रारंभिक चरण में व्यापारिक संयोजन ने बाजारों को स्थानीय-लिंक समूह या एक सम्मेलन के रूप में चलाया गया। अपने बाजार पर स्थानीय पकड़ बनाने के लिए व्यापक रूप से विकसित देशों के नए और तकनीकी दिशा में परिवर्तित बनाया गया। बाजारों शादी के अर्थमें होनें, संयुक्त एशिया के बाजारों में तकनीकी व्यापार लगातार गहराया और दुसरे देश अंतरराष्ट्रीय प्रतिस्पर्धा में शामिल हो गए। बाजार के स्थानीय दी तकनीकों को जड़ बनाया।

इस विस्तार के दौरान और इसके बीच के समय में अपने पूरे तकनीकी एवं प्रौद्योगिकी विकास हुआ। उसी समय, व्यापार बाजार के प्रणाली की भी नयी तकनीक का विकास हुआ। इस क्षेत्र में हार्डवेयर सूचीकरण में प्रतिवेदन विकल्पों का स्थान तकनीकी और वित्तीय निर्माण ने ले लिया।

आपने इसी तरह ही परम्परागत प्रक्रियाओं पर आधारित 'विकास' की निष्ठाएं धारण की अपने नये निर्माण के लिए अपनी तैयारी करने लगीं और बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का विकास इस विश्व के कार्य का आभास को रखा।

आप अंतरराष्ट्रीय विकासशील देशों या तीसरे दुनिया के रूप में ऐसे जाने वाले देश बहुराष्ट्रीय कम्पनियों के मकड़जाल में पंजी हुए हैं। बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का व्यापक क्षेत्र अंतर्राष्ट्रीय व्यापार है और उन्हें क्षेत्र में समय में इस्तेमाल अन्य वास्तविक उपहार से लेकर अपने क्षेत्रों तक तक के कर्मचारियों में इसकी पकड़ है। विकासशील देशों में इस कम्पनियों की पहलेवाहियाँ कुछ इस प्रकार हैं:

* विकासशील देशों में व्यापक रूप से उपलब्ध अन्वेषक तथा मानव श्रम का आधुनिक उपयोग कर अपने मुनाफे में बढ़ोतरी करना।
* छोटे-छोटे देशों के उपाध्यक्ष का विवरण देशों के कार्यवाही की जरूरतों के अनुसरण दर्जन और उन्हें अपने यहाँ ऐसे माल के बाजार पर परिशुद्ध कर देना।
* पुरानी और नवीनिकी हो रही आविष्कारण तकनीक की विकासशील देशों में इस्तेमाल कर और अधिक समय तक मुनाफे करना।
* विश्व बैंक, आई. बी. एस. , आई. एम. एफ. तथा उनके सहयोगी अंतर्राष्ट्रीय वित्तीय संस्थाओं में अपने प्रभाव के अर्थों विकासशील देशों के नीति निर्माण पर दबाव डाल कर अपने अनुकूल व्यापार शास्त्रों को मुंडक कर सकना।

भारत में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का संस्थान क्षेत्र में जंग दबावों बनाने के उद्देश्य में है। इसके अधीन व्यापक विकास बनाने वाले उपहार में बहुराष्ट्रीय कम्पनियों का बहु-प्रयुक्त है।
यूनियन कार्बाइड कापरेशन: अमेरिका की बहुराष्ट्रीय कम्पनी

इस कंपनी के अंतर्गत यूनियन का 37 देशों में लगभग 500 संगठन, खाने व खासी से फैले हुए है। सम्पत्ति के मूल्य के आधार पर इस कंपनी का आर्थिक में उन्नत होने वाला है।

इस कंपनी का इंग्रेज सेल, बैट्री, पेपरप्रेश, प्यारिक बैग के उत्पादन में पहला नंबर है और सार्वजनिक उद्योगों में तीसरा स्थान है।

इस कंपनी का विकास सन् 1886 में शुरू की गई उस कब्जे कंपनी से हुआ जिसने विश्व की पहला इंग्रेज सेल बैट्री का निर्माण किया और 'एस्ट्रैंड' ट्रेड मार्क को जन्म दिया। सन् 1917 में न्यूपार्क के कुछ सहायक समूहों ने इस कंपनी को चार अन्य कंपनियों के साथ जोड़कर यूनियन कार्बाइड कापरेशन की नींव डाली।

जब अमेरिका ने प्रथम विश्व युद्ध में प्रवेश किया तो कंपनी ने पहले काम के काबू पर उपयोग करते हुए कर गैस व तापमान के उत्पादन क्रमशः कर दिया। द्वितीय विश्वयुद्ध ने यूनियन कार्बाइड को अनु मुद्रा व्यवस्था में भी जोड़ दिया।

इस शताब्दी के उद्देश्य व सातवें दशक में यूनियन कार्बाइड को पर्यावरण का दुर्धर्म नंबर एक माना जाता था। पर्यावरण के संबंध पर सहकार समूहों ने सेट करवाया (अमेरिका) रिसर्च लॉट परिवर्तन व संयुक्त कार्बाइड को विवरण की सशस्त्रिक मूल्य वाली फैक्टरी पोशित किया था। बाहरी प्रणाली में द्वारा स्थापित सेट अनुपातों की मूल्य को इस फैक्टरी द्वारा उत्पन्न प्रदान के बावजूद से बनाने के लिये प्रारम्भिक के प्रेम से हास्यना पड़ा। 'प्रारूप' नामक परिकल्पना ने इसे 'प्रयुक्त प्रारूप' से समर्पित प्रतिक्रियासंबंधी संरचना' की श्रेणी दी है। सन् 1979 में 'वाल फ्रॉट जाल' ने इसे 'अन्यक बदलावों' में उपजों मदद के रूप में विवरण किया था।

इस कंपनी का कुल वार्षिक निर्यात दस हजार करोड़ रुपये से भी अधिक है जो कि तामाम छोटे-मोटे देशों के सालाना बजट से भी अधिक है।

इस कंपनी ने काफी मुनाफा सात सौ करोड़ रुपये है जो भारत के तराम राष्ट्रों के सालाना बजट से अधिक है।

इस कंपनी में एक लाख तेजी हवाओं तीन सी योजना काम कर सकते हैं।
निर्यातक तकनीक के निर्यात का नमूना

भारत: भोपाल में जो इंडस्ट्रियल औद्योगिक दुर्घटना की जड़ पूर्वी या निर्यात के निर्यातशाला देशों पर धोये जाने की व्यापक स्थिति में निहित है। तीन गति से निकाल लिया ली तकनीकी जानकारी से निकाल देशों में किसी पूर्व उपयोग के पूर्व के बाद जो नहीं है। कितना अंग्रेजी मुनाफा कमजोर हैं किस प्रकार बहुत अंग्रेजी कमजोर करने की लागत से वैश्विक संघ और वर्तमान के निर्यात चेतना की आवश्यक कार्यक्रम देशों पर धोया अंग्रेजी द्वारा निर्यात की है। भारत वैश्विक विश्वसनीय देशों अपने विश्वास की सार्वजनिक में भिन्न कुछ सीधे समझने निर्यात देशों पर भारत तकनीक के गले लगा कर निर्यात शिकार पर अपनी विश्वास के दोहर वर्णन करते हैं। निर्यात की इस दृष्टि में निर्यात शिकार व जनसाधारण को भी बल का बनाना पड़ रहा है।

अमेरिका व यूरोप में मिश्रित आईआईटी अध्ययनों का उपयोग करते हैं उपयोग का उपयोग करते हैं उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं। उपयोग का प्रयोग करते हैं।

भारत में ऐसा ही एक और उपयोग एसबीटी इंडस्ट्री के उपयोग के लिए निर्यातक हस्ताक्षर का राजा है। एसबीटी के उपयोग के लिए अन्य अभियां अधिक भाषा व अभियां की जनसाधारण का वर्तमान पर पड़े वाले इसके द्वारा भारत वैश्विक विश्वसनीय देशों में 400 करोड़ रुपए तकनीकी हस्ताक्षर पर खर्च कर रहा है।

विश्व की अन्य प्रमुख औद्योगिक दुर्घटनाएँ

* सिल्वार्ट, 1921: फ्रांस से 50 मील दक्षिण में वासन के इतिहास की सबसे बड़ी औद्योगिक दुर्घटना उस समय घटी जब छात्रों के मध्य में 4000 करोड़ निर्यात के लिए शिलालय को छापने का मदद से गोंड रहे थे। इस दुर्घटना में 561 लोगों की मृत्यु हुई तथा मौतें तक मकरण गिर गये।

* सन 1942: हार्दिको श्रेष्ठ खान में विस्फोट होने से चीन में एक इमारत पार्श्व सो मकबुलों की मृत्यु हो गयी।
* अल्पार्ट, 1944: कलीसीलैंड में ईस्ट ओशोंडो गैस के के तल प्राकृतिक गैस के तैल में विस्फोट होने से 131 व्यक्तियों की मृत्यु हो गयी।

* अगस्त, 1947: अमेरिका के टेक्सास पिटिंग में 1400 टन अमोनिया नाइट्रेट उत्परंक स्थल गैसवेस्टर खाड़ी में विस्फोट कर रहे 'ट्रिल स्क्वैथ' नामक मक्खिवालक जहाज ने आग लग जाने से भीतरियों विस्फोट हुआ। आग की लपट लगाने 700 पौंड तक प्रतीत और पास के मोर्सबीस्टो प्लांट ने भी आग पकड़ ली। स्ट्रीट्स और अन्य क्षेत्रों में विस्फोट ने जहाज के भीतरियों विस्फोट के बीतरियों ने नाइट्रेट की आग की लपट खाड़ी जाई और आग की लपट खाड़ी में आ गयी और उससे भी भीतरियों विस्फोट हुआ। इस दुर्घटना में 576 लोगों की मृत्यु हो गई और 2000 लोग गायब रहे पुराक पाया गया।

* जुलाई, 1948: जर्मनी में आई. जी. परम्परा केंक्वल्ड एस्ट ने उपरेंत हस्ताक्षर डाकर जा रहे वारें में फैशेट गैस के आन्दोलन बुझी ही विस्फोट हो गया। जब विस्फोट से 207 व्यक्तियों की मृत्यु हो गई और 4000 जन गायब रहे।

* सन 1956: 'बोहोलिया में डायफ्लाइट टूक में उपरेंत विस्फोट में ग्यास के 5 लोगों की मृत्यु हो गई।

* जून, 1974: ईस्ट ओशोंडो शाविकाल का सबसे भीतरियों विस्फोट नियों (गै. के) लिए रासायनिक संरचना में हुआ। इस संरचना में 'स्टोकेट्स का उपयोग होता है जब से नाइट्रेट नहीं जाता है। इस विस्फोट में 28 गैसकंडर की मृत्यु हो गयी और जय 60 एकड़ क्षेत्र को सभी इस्तेमाल मिट्टी में मिट गया।

* सन 1975: भारत में बाल्नासाडा कोरलिया खाड़ी में हुई दुर्घटना में 431 गैसकंडर की मृत्यु हो गई।

* जुलाई, 1976: इटली में सेवेस्को निश्चित बाल्मैन लारेशी एस्ट ने विस्फोट डायफ्लाइट के लिए जो कर दाब-वात अति से मिल जाने के प्रकाश घास बोट दुर्घटना हो गया। एक डाकर एक अन्य विकसितों को अपने जन बचाने के लिए भाग गया और तब उन्होंने खाड़ी में विस्फोट कर उसका उत्पन्न हो गया।

* जुलाई, 1978: रोम में 'स्टोकेट्स' गैस के एक ऑवर लोडीद टूक के उत्पादन ज्यादा होने से उसमें आग लग गयी और लगातार 100 पौंड तक का विस्फोट निकलता रहा जब ने फैशेट गैस में जल्द गई जहाँ लक्ष्य 780 पौंड गैस शही रही थी। इस दुर्घटना में 215 लोगों की मृत्यु हो गई।

* फरवरी, 1984: दिसंबर 1984 में पायल्टन से पैपआइल्ड लाक के विस्फोट की अधिकांश वाणिज्य में कम से कम पांच सी लोगों की मृत्यु हो गई।

* नवम्बर, 1984: वेस्टस्कॉन्लो की भीतरियों डायफ्लाइट दुर्घटना संचालक के 'पैपलाइल्ड लाक' की भाग्यवान गैसों में यात्रा के टूक करने के कारण हुई। इस दुर्घटना में 452 लोगों की मृत्यु रही और 4228 लोग घायल हुए हैं। लक्ष्य एक नहर लोग अव भी लागता है।
कृषि विकास नीति की तुलिताएँ

भोजन की जीवनशैली हमें अपनी विकास नीति के निर्धारण के भीतर निहित मुस्तकों को पुनः अधिकरण पर मजबूत कराना है। व्यवस्थापन के दौरान कृषि उत्पादन में आधुनिक निर्भरता प्राप्त करने की दिशा में हमारे तत्कालीन पत्र द्वारा करने के उत्तराधिकार ने एक ऐसे प्रामाण्य जवाब दिया है जिसमें हमें न ही वास्तविक आयुक्तियों का ध्यान हूआ है और न ही हम सामाजिक ग्याय के अपने निर्मित उद्देश्य को और बढ़ा सके हैं।

तेजी से बढ़ते आह्लादक और शारीरिक धमाल को जवाब पूर्वी करने के उद्देश्य से कृषि उत्पादन में अपरिहार्य बढ़ती है, जिसके लिए हमारे नियोजकों ने अपनी चिंता व परिस्थिति दलालकर्ताओं के प्रभाव के अंतर्गत भूमि के व्यापक विभाग व अन्य वर्गों के स्वरूप पर उन्नत बिंदुओं, राष्ट्रीय उद्योगों, कृषि उद्योगों व खाद्य-पुष्टीकरण निर्माताओं के प्रभाव के माध्यम से कृषि उत्पादन बढ़ाने का रास्ता चुना। सन् 1947 में 'अधिक आन्तर्जातिक उत्पाद' अभियान तथा सन् 1950-52 में एलबर्ट मेयर के 'सामूहिक विकास' के प्रयास इसी का नतीजा थे।

राजावर्गीय खाद्य, कॉप नस्तिकों व खाद्य-पुष्टीकरण निर्माताओं के बड़े मात्रा में झील हिरे जाने से कृषि उत्पादन में तकनीक व जैविक प्राकृतिक व्यवस्थापन की दृष्टि से अवस्था गर्भायुंग लगाते लगे। किंतु इसके बिना आयुक्तियों का ध्यान हुआ यह विकासकार्य है। क्योंकि राष्ट्रीय उद्योग व कॉप नस्तिकों के उत्पादन के समायुंग पर तकनीकी हस्तांतरण व उनके अन्याय को लेकर हम अमरीका व जूरूप्रय के मोहताल हो गए।
दूसरी ओर रसायनिक उत्पादों व कीटनाशकों का बैशाखी पर आपसी इस हित श्रेष्ठता ने पूर्ण विवरण की जिसमें स्वीकार की बियोकार्बन एवं भी विरासत कर दिया है। दृष्टि करने उपर से आपसी हित अंदाजे के हलकों में पूर्ण विवरण आवश्यक बन रही है। फ़िल्म इस साइट जाता हॉलर है जहाँ हित श्रेष्ठता के परिणाम स्वरूप भूमिका निभाना भारी सामी 50 प्र.र. से भी अधिक हो गया है।

चौथे दिन यह भाषा को उपयोग कर आई है कि इन उद्योगों और कीटनाशकों के अध्ययन से लाभ करते हैं, भी कीटनाशक का उपयोग कर जाता है। और कभी हलका करने भरें करने के लिए और बियोकार्बन का भरत कर हम इस क्रिया में जबर्दस्ती जाते हैं।

अन्तः स्पष्ट है कि विकल्प की प्रस्तुति कराने वाले सिरिज जोखिमपूर्ण रसायनिक उपयोग की कार्यान्वयन को निम्नलिखित दे रहे हैं और इसमें सामाजिक न्याय की पूर्वायोग नीति से भी दूर कर रहे हैं।

### कीटनाशकों का जोखिम भरा विज्ञान

पिछले दो दशकों से कीटनाशकों के क्रियान्वयन में निश्चित बढ़त हुई है। सभी कीटनाशकों का उपयोग विविधता किया गया है। कीटनाशकों की कहानी अपने उपयोग के लिए इलेमेन्ट और इलेमेन्ट के प्रभावों को प्राप्त कराने में है।

इलेमेन्ट इलेमेन्ट के धार्मिक सेवाएं, शायद, की अवधारणा से अनुसार कीटनाशकों की विविधता का समाहरण पताका लगा है। मलिश स्विन्यक्लिया में विविधता का गठन है और इसमें अधिक विकासशील देशों में ही होती है। विकासशील देशों में ही लगभग 10 हज़ार प्रयोग कीटनाशकों की विविधता के कारण मूल्य का विषय हो जाते हैं। नीचे वर्णन के इन देशों में कीटनाशकों के प्रभाव से होने वाली मौसम की संदर्भ, स्थानीय रोगों से होने वाली मौसम की अनुपस्थिति का कारण बन गया है।

कीटनाशकों का उपयोग कीटनाशकों की कार्यान्वयन करके सम्बद्ध होने के कारण उपयोग करने में संलग्न अभ्यासों की कार्य अवांछित जोखिमपूर्ण होता है और उपयोग के आस-पास की आवश्यकता के लिए सबसे खास माना जाता है। इलेमेन्ट को सेवाएं देने के लिए विविधता, उपयोग के साथ साथ, एक स्वशास्त्रीय रूप से, जी. एप्पल, ओल्शेथ और तात्विक, में अनुवाद के लिए कीटनाशक उपयोग के कार्य के लिए अन्य श्रमिकों में से तीन कीटनाशकों में विविधता का प्रभाव पता चला गया तथा एक तिहाद से अधिक में हैं। इलेमेन्ट के उपयोग करते हुए आप सबसे कीटनाशक का उपयोग करने में है।

### खतरनाक कीटनाशक अभी भी इस्तेमाल

जोखिम के कारण अमेरिका और इंग्लैंड जैसे देशों में जिन्होंने उपयोग व इलेमेन्ट पर प्रभाव प्रदर्शित किया है वहाँ कीटनाशक अभी भी हमारे देश में इस्तेमाल हो रहे हैं।

* **दी. बी. टी.** – हर वर्ष चौथा हजार टन
* **बी. एच. जी.** – हर वर्ष इकालेस्त हजार टन
* **एम. एली.सी.** – हर वर्ष चौथा हजार टन

आखिर ऐसा क्यों?
लम्बे समय तक कीटनाशकों का प्रयोग करने वाले किसान इसमें विशिष्ट विकास रासायनों के निर्लाब समक्ष में रहते हैं। विभिन्न माध्यमों से उनका सारी इसमें निहित कस्ट की सुरक्षा मात्रा लगातार प्राप्त रहता है। लगभग प्राप्त किये गये सामयिकिक कस्ट की संपूर्ण खर्च एक अत्यधिक के बाद तुलनात्मक पहुँचता है। आई.टी.अर, एस., लखनऊ एवं जे.टी. मेडिकल शास्त्री के उपरा अध्ययन में ही पाया गया कि कीटनाशकों के समक्ष में अने के केंद्र कृषकों में से 20 प्र.स. को मासिक शिक्षाद् के परिणाम स्वरूप दृष्टि हास का सामना करना पड़ रहा है।

जिन फसलों पर कीटनाशकों का प्रयोग किया जाता है उनमें भी प्रदूषण का खतरा बढ़ाने बना रहता है। कीटनाशकों के व्यक्तिगत प्रयोग के कारण पूरी की पूरी फसल के विकास को जाने की घटनाएं भी प्रकाश में आने लगी है। इंडियन एनिमल प्रोटेक्ट इन्स्टीट्यूट, यह दिल्ली की एक संगठन में विशिष्ट राहताओं में डी.डी. टी. के अध्ययन की मांड़ियां का हवाला दिया गया है। इसके अनुसार रेट में 1.6 से 17.4 पी.पी. एम. (क्रम प्रति दस लाख कप); वाण में 0.8 से 16.4 पी.पी. एम. रचिक्षाओं में 5 पी.पी. एम. तथा आलू में 68.5 पी.पी. एम. डी. टी. पाया गया।

इस्तेमाल और फर्क खाद्य समग्रों में - सभी कहीं कीटनाशक अन्य खाद्यनासक प्रभाव कोड़ से है।
आखिर इनकी इतनी ध्यान आवश्यकता है?
हम बच्चया कर सकते हैं?

इस भीतरण दुर्गटना और उससे जुड़ी तमाम बातों को पढ़ कर हमारे सामने उनके सक्षम खड़े होते हैं। इससे कई समायोग उठे, ड्रग्स से जुड़े हैं और कई इन बाइड़ों की हम उन्हें सुलझाने में हर एक को दुर्गट मान बैठ रहे हैं। विशेषता है कि इन नामों पर सामूहिक जन आंदोलन खड़ा करके ही इसका दूरगम्य निदान सम्पन्न है। निम्नलिखित प्रमुख मसले हमारे लिए सुरक्षा का सक्षम है।

* इस पूरे हद से और उसके बाद के सरकारी संवेदनों से एक बात साफ हो जाती है: आम आदमी-आँख को बिन्योग भी जानकारी नहीं थी और न ही अब है। खेपाल के कारखाने में काम

देश में जोखिमपूर्ण उद्योग कौन-कौन से हैं?

अमेरिका, उद्यागों में उद्योगन की प्रक्रिया के साथ या उससे बाद विषमूलय गद्दे जुड़े हुए हैं। इनमें से मुख्य उद्योग निम्न हैं:

* कॉलेक्शन उद्योग
* नाइट्रोजन तथा लोसियास के आधार पर ड्राक उद्योग
* रंग और पेंट बनाने वाले प्लास्टिक
* कंप्यूटर से बंद की बनाने वाले उद्योग
* ताबक तरह के समय बनाने वाले उद्योग
* ताबक, जलन, अल्युमिनियम, जिक आदि ब्रह्म पैदा करने वाले कारखाने
* कामदार बनाने वाले उद्योग
* दबाई बनाने वाले उद्योग
* नघडी को देनी
* सूती मिली
* पेनीशियम कारखाने
* सिमेंट के कारखाने (एसप्लेट लाइमेंट कॉम्पानी साहित)
* लिथ और जीद्र के बनाने वाले उद्योग
* वाल पेंसियल उद्योग

इससे मुख्य सुन्तुष्ट लाभ है।

क्या आप भी इसी तरह के संयोगों में काम करते हैं? क्या आपके घर के अंदर-पास इस तरह के कारखाने लगे हुए हैं? कभी उनके खतरों के बारे में सोचा है आपके?
इससे पता चलता है कि यदि जनता के अपने पौलिक अधिकार की मांग नहीं हुई तो तो कहना चाहिए कि क्या जनता को यह समझा गया कि इस सत्ता के अधिकार की मांग नहीं हुई तो तो कहना चाहिए कि क्या जनता को यह समझा गया कि इस सत्ता के अधिकार की मांग नहीं हुई तो तो कहना चाहिए कि क्या जनता को यह समझा गया कि इस सत्ता के अधिकार की मांग नहीं हुई तो तो कहना चाहिए कि क्या जनता को यह समझा गया कि इस सत्ता के अधिकार की मांग नहीं हुई तो तो कहना चाहिए कि क्या जनता को यह समझा गया कि इस सत्ता के अधिकार की मांग नहीं हुई तो तो कहना चाहिए कि क्या जनता को यह समझा गया कि इस सत्ता के अधिकार की मांग नहीं हुई तो तो कहना चाहिए कि क्या जनता को यह समझा गया कि इस सत्ता के अधिकार की मांग नहीं हुई तो तो कहना चाहिए कि क्या जनता को यह समझा गया कि इस सत्ता के अधिकार की मांग नहीं हुई तो तो कहना चाहिए कि क्या जनता को यह समझा गया कि इस सत्ता के अधिकार की मांग नहीं हुई तो तो कहना चाहिए कि क्या जनता को यह समझा गया कि इस सत्ता के अधिकार की मांग नहीं हुई तो तो कहना चाहिए कि क्या जनता को यह समझा गया कि इस सत्ता के अधिकार की मांग नहीं हुई तो तो कहना चाहिए कि क्या जनता को यह समझा गया कि इस सत्ता के अधिकार की मांग नहीं हुई तो तो कहना चाहिए कि क्या जनता को यह समझा गया कि इस सत्ता के अधिकार की मांग नहीं हुई तो तो कहना चाहिए कि क्या जनता को यह समझा गया कि इस सत्ता के अधिकार की मांग नहीं हुई तो तो कहना चाहिए कि क्या जनता को यह समझा गया कि इस सत्ता के अधिकार की मांग नहीं हुई तो तो कहना चाहिए कि क्या जनता को यह समझा गया कि इस सत्ता के अधिकार की मांग नहीं हुई तो
* इससे साथ ही जुड़ा हुआ प्रश्न विज्ञान का है। यदि हम गैर से देखें तो ज्ञान और विज्ञान की सभी सुविदाओं, मुनाफा बढ़ाने और संतोश का सम्बन्ध है। गौरवता, वैज्ञानिक, उपविकल्पित तथा अन्य संस्थाओं, वैज्ञानिक, कम्प्यूटर से मिलाकर कम्प्यूटर के मालिकों या सरकार के कर्मचारी में है। हमारे देश में हर तरह की समस्या संबंध, अर्थशास्त्र और वैज्ञानिक शोध कार्य है।

इसका पूरा परिणाम भोपाल की दुर्घटना से सफर जारी हो गया। गैस कहां से निकली, कहां निकली, उसके प्रभाव, उन घटनाओं की चिंता - सभी के लिए सरकार और कंपनियों के निवेश में रहने वाले वैज्ञानिकों और शोधकर्ताओं के उत्तर मिले। यदि गैस का लोगों और उनके जीवनपरिस्थितियों पर पड़े प्रभाव की जाँच होती थी, तो सब अवकल्प, वैज्ञानिक, विशेषज्ञ आदि सरकार और कंपनियों के ही हैं। यदि प्रभावित लोगों की दृष्टि जानवर होती है, तो भी वहीं। यदि काराखाने में स्थान उपलब्ध मिलती और सुरक्षा संदर्भों की परख होती है तो वहीं।

जन साधारण का ज्ञान-विज्ञान की विधा, साधारण और उपयोगियों पर कोई नियंत्रण नहीं है। वह यह समय नहीं कि आम लोगों को वैज्ञानिक और लाभकारी उपलब्ध हो जिससे वह अपने इंतजार में ज्ञान-विज्ञान का उपयोग कर सके। वह यह समय नहीं कि सरकार और कंपनियों को ज्ञान का वितरण इस इकट्ठा जानकारी को हम सब लिखकर बोला करें और आम लोगों के नियंत्रण को बदला दें। वह यह संभव है कि देश के लोग मजबूत संगठन मिला कर एक ऐसे कदम की स्थापना करें। जहाँ उद्योगों के खाँचों की पूर्ण आवश्यकता और जांच हो तथा जो आम मजबूत को लागू कर आगाज करता है। यदि अन्य देशों के मजबूत संगठन ऐसे कर सकते हैं तो समयकाल: हम भी।

* पहल कौन करेगा?

भोपाल की दुर्घटना से नामांकित कर दिया है कि फैक्टरी में इंजीनियर और वैज्ञानिक नियंत्रण बोई कलर हो गए है। नीचे तो उनके डायर विन्यास को मजबूत करने की प्रयास की। इसके प्रभाव न कर देंगे। इसके समान कंपनी के तीन उपविकल्प नहीं है। इसके बिना हमें पूरे जीवन को एक समय कानून सुलझता जाए जिनमें अभिव्यक्तियों के हों। अभिव्यक्ति देशों में इस तरह के मजबूत कानून को दूर रखने की तीन उप-कार्य और उसकी अपवादता पर भारी दंड की जाए। इन्हें तेरह वर्ष भारत भी लेते हैं। इन्हें तेरह वर्ष भारत भी लेते हैं। इन्हें तेरह वर्ष भारत भी लेते हैं।

इस तरह समय नहीं है। क्या हमारे शोकित अपने इस अभियान की गायक के लिए आदेश नहीं कर सकते?

दुर्घटना, इन जांच और नियंत्रण करने वाली संस्थाओं में विशेषता लोगों की बेहतर करें। भोपाल के फैक्टरी में इंजीनियर ने 'शिका' का लोगों को सुना था। ताही हो, सुधार जांच के लिए आदेश देता है। इसका नियंत्रण एवं उपयोग भी भारत की होगी। यदि एक फैक्टरी में इंजीनियर एक हजार कर्मचारी को नियंत्रित करेंगे और इसके प्रारंभ नियंत्रण नियंत्रण बोई करए इस वैज्ञानिक संगठन स्थापित करें और पानी और पानी के प्रभाव को जानकारी का निजीपत्र लेंगे तो क्या सही दंग से जाँच हो पाएगी? यदि हम
इन जीव संरक्षणों को उनकी सही भूमिका का अर्थ करने देने का है तो इन बातों पर भी ध्यान दिया जाना होगा।

तीसरा, बहुमुखी कम्पनियों के विकासशील देशों में जोड़ने भरे कारखाने लगाने के लिए हमारे देशों में स्थापित होने का काम कर सकता है। इसलिए, हमारे देशों में जोड़ने का कमांड देता है।

* इस तरह के विकल्पों का मायना करने का लाभ के लायक सुक्ष्म पर पूरा मामला ही है।

यह पहली कम्पनी की जगह में नहीं होगा। यह कम करने का काम करता है। इसलिए, हमारे देशों में जोड़ने का लाभ ही है।

* इस तरह के विकल्पों का मायना करने का लाभ के लायक सुक्ष्म पर पूरा मामला ही है।

यह पहली कम्पनी की जगह में नहीं होगा। यह कम करने का काम करता है। इसलिए, हमारे देशों में जोड़ने का लाभ ही है।

अतः यह सुनना चाहिए कि दूर-दराज, सुसंगत बाजार पर कारखाने लगाने से सुविधाजनक करना होगा, गलत ही लगाना है।

पिछले दूर-दराज, कम आवश्यक बाजार में कारखाना लगाने से उन देशों को दीनी प्रभावित करना तो इस कल्पना से नहीं व्यक्त करता। साथ ही, सूचित, अनदेखी जगह पर विश्व यह कारखाने हवा और आयु के
प्रीया की स्त्री भर भी पकड़ नहीं करती क्योंकि उन पर निगरानी रखने कोई नहीं होगा।

इन सबके बजाय क्यों न सहज-साधारण पदार्थों और प्रक्रियाओं के बारे में जानकारी ना दी जाए? इन उन उदाहरणों और तकनीकों को क्यों इसमें तक किया गया है? इसके लिए सामाजिक पहल जरूरी होगी।

* भोपाल की इस दुर्गम ने हमें चौंका दिया है। इसके पहले और आज भी इस तरह की छोटी-छोटी नायकों को हुई है और हो रही है। गंगा का पानी प्रभावित है, गंगा में सूखा हो तो खत्म है, जलवायु बदलता है, नदियाँ बदलती हैं। यह पर्यावरण का असर है। यह पर्यावरण का असर है। यह पर्यावरण का असर है।

इसके साथ ही तेह्रेन जिला, हारियाना और आदिवासी हृदयाकों हो रहे हैं। यह थे-बड़े जंगलों से मिलता है। इसके साथ ही तेह्रेन जिला, हारियाना और आदिवासी हृदयाकों हो रहे हैं। यह थे-बड़े जंगलों से मिलता है। इसके साथ ही तेह्रेन जिला, हारियाना और आदिवासी हृदयाकों हो रहे हैं। यह थे-बड़े जंगलों से मिलता है।

इसके साथ ही तेह्रेन जिला, हारियाना और आदिवासी हृदयाकों हो रहे हैं। यह थे-बड़े जंगलों से मिलता है। इसके साथ ही तेह्रेन जिला, हारियाना और आदिवासी हृदयाकों हो रहे हैं। यह थे-बड़े जंगलों से मिलता है। इसके साथ ही तेह्रेन जिला, हारियाना और आदिवासी हृदयाकों हो रहे हैं। यह थे-बड़े जंगलों से मिलता है।
हमारे बारे में

सोसाइटी फाउंडेशन इंडिया इन एशिया (संक्षेप में ‘प्रिया’) नई दिल्ली स्थापित एक स्वयंसेवी संस्था है। गृहरथ्य का मुख्य उद्देश्य स्थानीय संगठनों और समूहों के साथ जुड़कर गरीब लोगों द्वारा अपने कर्मचारियों में चला जा रहे संगठनों और आंदोलनों को एक छोटी-सी मदद पहुँचाना है। ‘प्रिया’ यह मदद प्रशिक्षण, अनुसंधान, मूल्यांकन और शैक्षणिक सामग्री की तैयारी के माध्यम से करती है। हमारी संस्था में दस से कम लोग हैं और देश के अन्य भागों में स्थानीय लोगों से मिलकर ही हम काम करते हैं।

पिछले तीन वर्षों में प्रिया ने प्रौढ़ शिक्षा, बनवासी और वन-विनाश, भूमि हस्तांतरण, औद्योगिक स्वास्थ्य, आदि मुद्दों पर मुख्य रूप से चर्चा दी। इसके अलावा अनेक स्थानों पर स्थानीय किस्मों को लेकर कार्यरताएं तथा प्रशिक्षण के कार्यक्रम भी आयोजित किए गये हैं।

इस रिपोर्ट को अनिल चौधरी और राजेश टॉन्न ने तैयार किया है। विज्ञान और प्रशासन संस्करण के साधरे जनवरी 1985